रूखी-सूखी
पश्चिमी निमाड़ में अकाल – आदिवासियों के अनुभव
एकलव्य

रूखी-सुखी

पश्चिमी निमाड़ में अकाल - आदिवासियों के अनुभव

आधारशिला शिक्षण केन्द्र के विद्यार्थियों की प्रस्तुति

चित्रांकन व डिज़ाइनः नर्गिस शेख

एकलव्य का प्रकाशन

इस किताब के बारे में...

अकाल का नाम सुनते ही हमारे मन में सूखे खेतों का चित्र उभर आता है। लेकिन किसानों के लिए फसल न पकने के बहुत-से कारण होते हैं – जानवर, कीड़े, अधिक वर्षा या गलत समय पर वर्षा। इतिहास में बहुत बार ऐसी स्थितियाँ आई जब कुछ भी नहीं पका और भुखमरी हो गई। किसानों की स्मृति में उनके या उनके पूर्वजों के ये अनुभव आज भी जीवन्त हैं और कहीं न कहीं उनके सोचने के तरीके और फैसलों को प्रभावित करते हैं।

इतिहासकार कभी-कभार अकाल या भुखमरी की बात तो करते हैं, परन्तु वे अधिकतर अभिजात्य वर्ग के विवरणों, सरकारी दस्तावेज़ों या अन्य लिखित स्रोतों पर निर्भर रहते हैं और किसी प्रमुख घटना के इर्द-गिर्द कहानी बुनते हैं। जबकि लोगों के विवरणों में हमें प्रमुख घटना के इतर कुछ अन्य बातें सुनने को मिलती हैं जिससे उस समय के दैनिक जीवन का एक चित्र उभरता है। ये वर्णन हमें केवल यह नहीं बताते हैं कि हालात कितने बुरे थे। वे यह भी बताते हैं कि जब अनाज नहीं हो तो क्या-क्या खा सकते हैं, जंगल में क्या-क्या मिलेगा, कम पानी में या सूखे में क्या उगा सकते हैं, आदि-आदि। मौखिक परम्परा के रूप में यह जानकारी आज भी हमारे गाँव के बुज़ुर्गों के बीच मौजूद है। आज भी जब वर्षा में कमी आती है, वे उन बातों को याद करते हैं और उनका उपयोग करते हैं।

परन्तु सच्चाई यह है कि बहुत कम इतिहासकारों ने मौखिक परम्परा में बसे इस ज्ञान का उपयोग किया है। दस्तावेज़ों के साथ इन वर्णनों को देखना केवल अच्छे इतिहास लेखन की दृष्टि से नहीं परन्तु पारम्परिक ज्ञान को सँजोने की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। जैसे इस दस्तावेज़ को पढ़ने से स्पष्ट होता है कि भूख से निपटने के लिए सरकारी नीतियों के बनिस्बत जैव-विविधता कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, जो ऐसी स्थितियों का सामना करने में सरकार पर आश्रित होने की बजाय लोगों को स्वयं सशक्त बनाती है।

आधारशिला के बच्चों और शिक्षकों का यह प्रयास इतिहास लेखन के भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह सिद्ध करता है कि छोटे-से गाँव के आदिवासी बच्चे भी शोध कर सकते हैं, इतिहास लिख सकते हैं और उसे आम लोगों के लिए प्रासंगिक बनाया जा सकता है। ऐसे प्रयास समाज के रोज़मर्रा जीवन और इतिहास के बीच की खाई को पाटने में भी मददगार होंगे।

यह किस्सा कैसे शुरू हुआ...

वैसे गाँव के बड़े-बुज़ुर्गों से अपने इलाके की जानकारियाँ पूछकर लिखना आधारशिला के इतिहास शिक्षण का एक अभिन्न अंग है। इसी के चलते सन् 2000 में जब एक स्थानीय संगठन ने अकाल होने पर रैली निकाली, तो सवाल उठा कि अकाल क्या होता है। आसपास के कुछ खेत तो कुँओं के कारण हरे-भरे दिख रहे थे। यह तय किया कि बच्चे गाँव में जाकर पता करें कि अकाल है भी या नहीं। इस साल क्या पका और क्या नहीं। साथ ही अतीत के अकाल के बारे में भी पूछें। बच्चे जब लोगों की बातें लिखकर लाए तो पता चला कि पुराने अकाल की रोचक बातों से ही उनकी कॉपियाँ भरी थीं। इस साल क्या पका, नहीं पका तो चार लाइन में लिख दिया था। ये बातें आसपास के गाँव के दस-बारह बुज़ुर्गों से पूछकर लिखी गई थीं। इनमें 1899 के मशहूर छप्पनिया अकाल से लेकर हाल के अकालों की बातें मिली-जुली थीं।

इस जानकारी को प्रश्नवार बाँटकर लिखने का बड़ा सम्पादकीय काम भी बच्चों ने ही किया। कुछ बातें जो नहीं पता चलीं, उन्हें दोबारा जाकर पूछा। इस पूरे काम में एक-डेढ़ महीने का समय लगा। हम इसे यहाँ बहुत ही कम सम्पादन के साथ पेश कर रहे हैं।

बच्चों के इस शोधकार्य का उदाहरण राष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण अनुसन्धान परिषद् (NCERT) की शिक्षा व कार्य पुस्तिका में भी दिया गया है – यह बताने के लिए कि शिक्षा केवल पहले से मौजूद ज्ञान को परोसने और पचाने का काम नहीं बल्कि सचमुच नए ज्ञान के निर्माण का ज़रिया भी हो सकती है।

एक बार फिर से दोहराना चाहेंगे कि यह प्रयास दो दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण है। एक तो स्कूली स्तर पर बच्चों को इतिहास बोध कराने व ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया की दृष्टि से। दूसरे, आज खाद्यान्न संकट पर ऊँची-ऊँची इमारतों में बड़े-बड़े अधिकारियों और विशेषज्ञों के बीच अनन्त बहसें जारी हैं। इन उच्च-स्तरीय बहसों से भी वही बात निकलकर आ रही है जो इस सरल-से शोध से स्पष्ट है – कि इस संकट से जूझने के लिए जैव-विविधता एक सशक्त हथियार है जो लोगों व देश को आत्मनिर्भर बनाने की ताकत रखता है।

तो चलिए, बच्चों की इस शोध यात्रा के हमसफर बनें...

एकलव्य व आधारशिला समूह
फरवरी 2014